

रजुली गथ्य त्वे धाल सा सूर्य त्वे सुन त्व क पुस्य तल डा व निसे जनु व थ्ये थ त्व थ्ये फोल जनु पुत्र ॥ ५० ॥
॥ असता सहसं गेन कोन पा त्वे धमी गति ॥ पयो पितो ए नि हो से मश मित्य विधी यते ॥ कु जाति पुरुष ओ
सं गन जुल डा व ड त्र म मनुष्य जुल सने कहान बनि व गथ्य त्वे धाल सा सौ ए नि या हस स चो ड ड ड जुल सने
लोक ने थ तु भाल पुथ्य ॥ ५१ ॥ ॥ असत्स प र्क दोषे ए अध मा या त्रि सा ध व ॥ मार्गे पुति मि रस्य र्क ४ स मो पि वि
समा यते ॥ असा धु ओ ना पा चो डा गु या दोष न सा धु जन प नि अध म जु ली गथ्य त्वे धाल सा अ ध काल खि डु न
ला स लोक पुस्य सा थ व ड ले स मा थ म वा ले ना रा डा पा र्थे डा पुत्र ॥ ५२ ॥ ॥ इ त्र मै ४ सहसं गेन कोन पा तिस
उन्न ति ॥ म दू ति ए नि धार्ये ते ग्री धिते ४ कु सु मै ४ सह ४ ॥ नि ड पुरुष व ना र्प चो न डा व ए र्थि मनुष्य नि ड जु ला
गथ्य त्वे धाल सा वा क स्वान स घा सै लो पा र्थे घा सन र्प मो ह स डु या व त व थ्ये थ त्व थ्ये नि ड व सी ग या प मा
ला ॥ ५३ ॥ ॥ किं करि त्स ति र्प र्क ४ स्व ना वो ड र ति क म ४ ॥ प र्था म्ब फल म ध्य र्थे क र्वा यो ना मू ती ग त ४ ॥

नारपको वज्रको दाय सो भाव ही ले म पुत का व. स्वतो थ्ये सो कुने अ व ओ ना प. चोन सनी अ व पु फा कु व पा ड
 स्वा ह. जु य म पु थ्ये सो भाव ही ले म फत ॥ ५४ ॥ ॥ सर्क रा व सु र्ग धे न म ध्या नि म्ब प्रतिष्ठि ती ॥ म धु क्षी र स मा
 ब धि नी म्ब कि म धु रा प ते ॥ सा र्ध ल त ल ला पा व नि म्ब पु ह धु स पे या त य. थ्या र्ते स लि क लि व. दु ड व नी हा
 य स. वि र्य त या न. थ थ नी नि म्ब चा कु य के म जि व थ व थ्ये ॥ ५५ ॥ ॥ पु स के पु च या वि या पर ह लि पु य
 नी ॥ का र्य काले स मु प त्रे न सा वि या न च द नी ॥ पु ष क स चो र्य त या वि या मे व या ला हा त स. वि या त या ध न
 का र्य प्र यो ग या य वे ल स म ह त क व. थ वि या ड. थ ध नी दु प्र यो ज नी म दु ग न ति ति र ल गे म जु ली ॥ ५६ ॥
 इ र स्या ने नि मि त्रा णि नि स्ने हा नि च वी ध वा ॥ कि प्र यो ज न क र्त्त व्य म र्थि तो नि स्फ ला नि च ॥ इ र स चो ड मि त्र से
 ह म दु वा च व स र्च न. दु प्र यो ज न या य वे ल स के ने म दु नि स्फ ल ॥ ५७ ॥ ॥ अ ट म्बो ड म पु ष्या नि. इ र स्या नि च वी
 ध व ॥ का ते चा ले ष न ते षु. ५८ काले नो प ति ष्ठ ति ॥ व न स चो ड सि मा या स्वा न. इ र स चो ड. र्धु ज न वे ल

राम ४
 १८

ज्ञा

स म ड. चो र्य त या थ्ये ॥ ५८ ॥ ॥ प्र ना व च न ही न स्य क र्म ही न स्य यो न र ॥ नि र्था चे त ना त स्य न स्य न्याः
 कृत यो र्य था ॥ प्रा ण म ड व व न. ज्ञा म स व न. या ण गु ज्ञा नि र्थ बु धि जु ली ग र्थ त्वे धा ल सा लु स. धे ल लु
 या थ्ये ॥ ५९ ॥ ॥ बा ग पु र्ण ऋ षि आ र्द्र. र म्य तो क ल ह स था ॥ च त्वा रो नि स्क र्त्त या त्ति. प्र ना ते मे घ र स र ॥ चो ल
 स. ल्वा ण गु. ऋ षि लो क या आ र्द्र स्त्री पु रू ष या. क चा द सु र्ध. ज्ञा स्य व व. मे घ थ पे ता ड. नि स्फ ल जु ली ॥ ६० ॥ ॥
 नि स्फ ला क प ना से वा नि स्फ ला र ति चा तु ले ॥ दो ष सै पु क्क री ल स्य श्रु ति वि प्र स्य नि स्फ ला ॥ क प नी या के से वा
 या के से वा या ण गु रो गि या के र ति सै जोग या ण गु रो वी या के री ल. बा ल ण न डे. ज्ञा प र्थ. थ ते नि स्फ ल जु
 ली ॥ ६१ ॥ ॥ व र ये क ल यी प्रा णो वि रू प म पि क र्त्त का ॥ रू प स्वी नी न नी चा तु वे वा क्य स रो कु ले ॥ ज्ञा नी
 लै न. लु कु ल स. जा य ल पु. क न्या वि रू प जु ल स नी. वि वा हा. या य. मा ल. रू प व नी. जु ल स नी नी च जा ति
 म ते व थ म व. स म न तु ते वा ॥ ६२ ॥ ॥ वि षा र ष्य मि ते ग्रा स्य म मे ध्या म पि की च न ॥ नी चा र्पु

तमोविशीं स्त्रीरत्नं दुष्करादपि विषयचोड जुलसनी अमृत जुलसनी काय योग्य अपवित्र थायस
 चोनसनी लुसुद्ध जुल कायमालीनी चपा के जुलसनी उत्तम विद्या जुलसनी स्यनेमाल अकुलीन जुल
 सनी स्त्रीरत्न जुलसनी काययोग्य ॥६३॥ ॥ कस्य होषं कुलेनासि व्याधिना कोन पिद्यते ॥ केन ते य सनी प्रा
 यी भियः कस्य निरन्तरी ॥ सुपाकुल स होषमदु व्याधीनं न विडल पुसुद्व ॥ इष्टव मसेव सुद्व संपत्ति
 सहस्र धिरन सुपाद्व स चोडद्व ॥६४॥ ॥ होषोप्यसि गुणप्यसि निर्गुणेषु पिजायते ॥ सुकुमारस्य
 पद्मस्य नारो नवति कर्कश ॥ होषन महोली सुनी होमे गुण जुलसनी महोली मङ्गल्य ली धालसा कुमलः
 पली स्वान या नालस कर्कश काथद्व चत्थ ॥६५॥ ॥ अमर्त शिशिरेव कि अमर्त शीर नोजनी ॥ अम
 ते गुणवति नार्या अमर्त बाल भासिती ॥ शिशिर कालस मि अमर्त जुल खिर नोजन अमर्त जुल गु
 णवति सस्त्रि अमर्त जुल बाल कन ज्ञायावचन अमर्त जुल ॥६६॥ ॥ दुल्लभा प्राकृती वानी दुल्लभ

राम ४
१२

ASHA ARCHIVES 3650

सुसमीपनु ॥ दुल्लभ सुसुद्व तारी दुल्लभ वचन प्रिय ॥ दुल्लभ जुल प्राकृत वचन दुल्लभ जुल समावत
 त्वामि दुल्लभ जुल हीतस्त्री दुल्लभ जुल लोकोवतुव ज्ञाय गुमधुर वचन ॥६७॥ ॥ नदीनी जाद्रवीः
 श्रेष्ठ नारीनी च प्रतिवृता ॥ मनुष्या नो नृपोप्यकु देशोनी यत्र निवृति ॥ नदी रक्ष स गंगा श्रेष्ठ जुल मि
 सारक्ष स प्रतिवृता ली श्रेष्ठ जुल मनुष्य रक्ष स राजा श्रेष्ठ जुल देश रक्ष स गंगाराजा रत्ना ओ देश श्रे
 ष्ठ जुल ॥६८॥ ॥ पुत्रोपे त्रसमाकीर्ण रासी रास समाकुली ॥ नार्या विरहिती पुंसी पथारण्य थोते गृहे
 कार्य छप रत सनी चेल भातिनी सैजु कपोजे चोन सनी मोम दत कुव पुरुष ली दे चोन सनी गुस चो
 डथे ॥६९॥ ॥ सर्वेपी मेवर वानी स्त्री पीरत्न मनुत्तमी ॥ तस्मात्त दर्थ निचया ताश्च त्यक्ता धनेन कि
 ॥ समस्त रत्न रक्ष स स्त्रीरत्न उत्तम चतेन धनयासीन स्त्रीरत्न उत्तम जुलो ॥७०॥ ॥ कुस्त्री हन्ति कुद्वानि कु
 पुत्रो कुल हन्यते ॥ कुमन्त्री हन्यते राजा राक्ष चौर ए हन्यते ॥ कुवेहर ए रक्ष मिस्तान कुद्व व मोच कली कु

श्री०
॥२०॥

पुत्र कायनकुल मोचकल कुमत्रीन राजामोचकल खुन लाजे पा लालामोचकली ॥७१॥ ॥ स्त्रीना
रोष सह साणि गुण स्त्रीणि मही पते ॥ गृहा चाल सुतोत्यति मरणे पतिना सह ॥ मिसा या के होय हो
रुद्धि तो १०००० हूँ गुण स्वता ३ हता जो छि राजा स हूँ सुकुदुव विहूँ न पाय काय वीयका व विप थव
पुरुष व न पा सें समन सति वने थते स्वता ३ गुण हता ॥७२॥ ॥ कवय ४ किं न पश्यति किं न नक्ष
ति वायसा ॥ पुमरु ४ किं न कुर्वन् किं न जल्यति मय पा ॥ कवि पण्डित पनिस्य दुत मखा ५ कवन दु
त मन व मिसान जजन दुत कर्म मया क थन का वलन दुत ध क मन्वा क ॥७३॥ ॥ पुत्र प्रयोजना
भाषा पुत्रा पिण्ड प्रयोजना ॥ हित प्रयोजना मित्रं सर्व मात्म प्रयोजन ॥ काय हय के यात स्त्री साधल पे
थ व तं पिण्ड थय के यात काय साधल पे हित यायन मीत्र साधल पे थ व शरिर सहित यायन सर्व प्र
योजन हय के ॥७४॥ ॥ समुद्रावरण भूमि प्राकारा वं ए गृह न रे आवरण ४ हेरा ४ चरित्रावरणास्त्रि

१६

राम ४
॥२०॥